# सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

• डॉ अनिल कुमार कोरी

# सृजक-सृजन-समीक्षा

**डॉ अनिल कुमार कोरी**

**अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन**

**इंदौर,मध्यप्रदेश**

# अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

**कार्यालय**: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

**शाखा**: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,

इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

**दूरभाष**: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

**अणुडाक**- antrashabshakti@gmail.com

**अंतरताना**- www.antrashabdshakti.com

**मूल्य**: **४०.०० रुपये**

**आवरण**: **मृदुल जोशी**

**मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स**, **वारासिवनी**

**वैधानिक चेतावनी** : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

# अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत

# "सृजक"

## डॉ अनिल कुमार कोरी का परिचय

**नाम -** डॉ अनिल कुमार कोरी

**पिता का नाम-** स्व. श्री भवानी प्रसाद

माता का नाम - श्रीमती गंगा बाई

**पत्नी का नाम -** श्रीमती विनीता

**जन्मतिथी :** 01/06/1967

**शिक्षा :** बी ई (इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग)1989,रीवा

एम ई (हाई वोल्टेज) 2003 जबलपुर

पीएचडी (ट्रांसफार्मर एनालिसिस) 2015 RGPV भोपाल

**वर्तमान/ स्थाई पता -** 1083, संजीवनी नगर, गढ़ा,

जबलपुर, मध्य प्रदेश -482 003

**फोन नंबर-**0761-6545235

**वाटस एप नंबर-**91-9425356998

**ई मेल-** akkori2013@gmail.com

**कार्यक्षेत्र :** शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय जबलपुर में प्रोफेसर विद्युत विभाग लगभग 25 वर्षों से

**शोध क्षेत्र :** राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के जर्नल्स में लगभग 20 पेपर पब्लिश्ड हैं

**विधा :** गद्य एवं पद्य

**प्रकाशन :** विभिन्न समाचार पत्रों में रचनाओं का प्रकाशन I काव्य संग्रह प्रकाशन हेतु दिया हुआ है।

**आत्म-कथ्य**

बचपन से मुझे फिल्मी गीत,लोकगीत आदि गाने का बहुत शौक था I बचपन के दिनों में मैं जब अपनी मस्ती मे गाता था तब मेरे आस-पास जो बड़े बुजुर्ग हुआ करते थे वह मेरा गाना बहुत पसंद करते थे I जब कभी भी घर के आस-पास कभी किसी मंच पर कोई कार्यक्रम होता था तो सबसे पहले मुझे गाने का मौका मिलता था I यही सिलसिला स्कूल और कॉलेज में भी हुआ जहां पर मैंने गीत गायन कार्यक्रमों में हिस्सा लिया I घर के आस-पास में रामलीला के मंच पर जो भी प्रसंग चलते थे उनको मैं बड़े ध्यान से सुनता था I उनके अभिनय जो काव्य रूप में संवाद होते थे उनको मैं बाद में दोहराता रहता था I बाद में टेप रिकॉर्डर पर कैसेट के माध्यम से विभिन्न कवियों को सुना करता था I विभिन्न मंचों पर मैं इन्ही हिंदी कवियों के काव्य का पाठन भी किया करता था I जिसकी बहुत सराहना होती थी I यहीं से मुझे लेखन एवं उनके पाठन एवं गायन की ओर रुझान हुआ I मेरे इस विधा को गति मेरी पत्नि जो स्वयं एक कवयित्री हैं श्रीमति विनीता पैगवार एवम् अंतरा साहित्य समूह से मिली है।

**डॉ अनिल कुमार कोरी**

# "सृजक का सृजन"

## राहें दिखा गये भगवान बुध्द थे

सन्मार्ग पर चले
भगवान बुद्ध थे ।
राहें दिखा गए
भगवान बुद्ध थे ।

दुनिया का दर्द देखके
त्यागा ये तख्तो ताज ।
होकर के लीन साधना में
सबका संवारा आज ।
शांति सिखा गए
भगवान बुद्ध थे ।

सन्मार्ग पर चले
भगवान बुद्ध थे ।
राहे दिखा गए
भगवान बुद्ध थे ।

हेवान बन गया था जब
इंसान एक वक्त ।
जीवों को मार काट कर
दिल बन गया था सख्त ।
अहिंसा बता गए
भगवान बुद्ध थे ।

सन्मार्ग पर चले
भगवान बुद्ध थे ।
राहें दिखा गए
भगवान बुद्ध थे ।

इस जग में जिस भी वक्त पर
विपदा पड़ी बड़ी ।
भगवान नए रुप में
जन्मे उसी घड़ी ।
सृष्टि बचा गए
भगवान बुद्ध थे ।

सन्मार्ग पर चले
भगवान बुद्ध थे ।
राहें दिखा गये
भगवान बुद्ध थे ।

# किताबें

किताबों को बनाकर सखी
मेरी जिंदगी बसर हो रही है ।
शमां जलने से सहर होने तलक
इन्ही के सहारे चली जा रही है ।

लब पर मेरे मुस्कुराहट इन्ही से
इन्हीं से कटी मेरी तनहाइयां ।
दम से इन्हीं के मेरे दिल की धड़कन
ये छूती मेरी दिल की गहराईयां ।
अब इस जिंदगी को इन्हीं का सहारा
इन्हीं से गुजारा किए जा रही है ।
शमां जलने से सहर होने तलक
इन्ही के सहारे चली जा रही है ।.......

पढ़ती हूं जब मैं कोई भी कहानी
ये छूतीं है रूह बनती ताकत रूहानी ।
नया गीत हो या गज़लें पुरानी
ये लगती है मुझको सुहानी सुहानी ।
मेरी जिंदगी में है रोनक इन्हीसे
बस इनको ही अपना किए जा रही है ।
शमां जलने से सहर होने तलक
इन्ही के सहारे चली जा रही है ।

# संस्कार

हमारी तहजीब हमारे संस्कार
सिखलाते हैं हमें हर बार
रखो सभी से समभाव
करो सभी से प्यार
यह देश विविधताओं का है
इस देश में आदर सभी का है,

इस देश की संस्कृति कहती है
यह देश सभी धर्मों का है
इस देश में अनेक भाषाएं
इस देश में अनेक बोली है
इस देश में कितने त्यौहार हैं
जिससे है बनी रंगोली है,

हम करते हैं सम्मान सभी का
पूरी वसुंधरा परिवार बने
हम मेहनत से ऐसा काम करें
कि सारे विश्व के लोग इंसान बने,...

# तरु

हे तरुवर इस वसुंधरा की
तुम तो हो सौगात
तुम से चलता सब का जीवन
तुमसे जग का साथ

मिले सभी को प्राण वायु
और तुम्ही से छाया
अगर ना होते तुम इस जग मैं
मिट जाती सब का काया
हमने समझा हमने जाना
तुमसे है हर बात
तुम से चलता सब का जीवन
तुमसे जग का साथ .........

फल और फूल हमें मिला है
और औषधि पाई
तुम्हें काटकर पाप किया तो
समझो शामत आई
अब तो पेड़ बचा लो समझो
ये है पितु और मात
तुमसे चलता सब का जीवन
तुमसे जग का साथ .........

## प्रश्न

वो तो यूं ही हाल बेहाल जिंदगी में बढ़े जाते हैं
एक हम हैं कि अच्छा करें तो भी प्रश्न खड़े हो जाते हैं

वह रोज की तरह सड़क पर कचरा किए जाते हैं
हम झाड़ू लेकर सड़क झाड़ने लगे तो प्रश्न खड़े हो जाते हैं

वह आदतन लाल बत्ती में भी चौराहे पार किए जाते हैं
हम हरी बत्ती में भी पार करें तो प्रश्न खड़े हो जाते हैं

वह जब चाहे मार्ग घेरकर कार्यक्रम कराते हैं
हम घर पर भी खुशियां मनायें तो प्रश्न खड़े हो जाते हैं

बड़ी बिडंबना है इस देश की यारो भ्रष्टाचारी मजे उड़ाते हैं
और ईमानदारी के काम में प्रश्न खड़े हो जाते हैं

# आशा

दामन थामे आशा का
जीवन पथ पर चलता चल ।
कर्म प्रधान बना कर खुदको
भाग्य की रेखा बदलता चल ।

माता और पिता को तो है
तुझसे यह उम्मीद बड़ी ।
कितनी भी मुसीबत हो या
संकट की हो कोई घड़ी ।
रहमत की वर्षा होगी तू
पुण्य काज को करता चल ।
कर्म प्रधान बना कर खुद को
भाग्य की रेखा बदलता चल ।....

अब तो तुझे गुजरना होगा
आंधी और तूफानों से ।
टकराना होगा तुझको तो
पर्वत और चट्‌टानों से ।
राह सफर की सरल बनेगी
पथ की राह पे चलता चल ।
कर्म प्रधान बना कर खुद को
भाग्य की रेखा बदलता चल ।.....

## भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार को सभी जानते इसे छोड़ ना पाते ।
भ्रष्टाचार से मुक्त बनाना भारत यह सब गाते ।

मन में कुछ है जुबां पे कुछ चोर बने हैं साधु ।
जनता को कुछ समझ ना आता इन नेताओं का जादू ।

गुजरेगा दिन कैसे भी कट जाएंगी रातें ।
भोली जनता को लगे ये बेकार की बातें ।

भ्रष्टाचार को सभी जानते इसे छोड़ ना पाते ।
भ्रष्टाचार से मुक्त बनाना भारत ये सब गाते ।

# "सृजन की समीक्षा"

**1.**

आदरणीय अनिल कोरी जी

सादर नमन

सब से पहले तो आप को बहूत बहूत बधाई और काव्य संग्रह के प्रकाशन हेतु बहूत बहूत शुभकामनाएं।

आप का परिचय पढ़ा, अच्छा लगा कि **आप एक इंजीनियर ऊपर से कार्यरत हो कर भी इतना सधा हूआ सघन लेखन कर लेते है, इसके लिए बधाई।**

आप के परिचय से एक बात बहूत ही स्पष्ट होती है कि आप को शिक्षा से बेहद लगाव है और एक जुनून सा है।1989 में बी ई करने के बाद 2003 में एम ई उसके बाद 2015 में पीएचडी करना। और इतने शोध पत्र लिखना बेशक आप का शिक्षा के प्रति लगाव दर्शाता है।

**राह दिखा गए भगवान बुद्ध थे..व्वाह** आप ने सरल शब्दों में भगवान बुद्ध का जो वर्णन किया तारीफ़े काबिल है

किताबें..बहूत ही अच्छी, रचना ने ये अहसास करा दिया कि सुख दुख हर पल का साथी किताबें है।

**संस्कार..**इस रचना के माध्यम से आप वाकई अपना संदेश देने में सफल रहे।

**पेड़..**सही कहा आप ने, पेड़ से ये जीवन चल रहा है..और बचाना होगा..सार्थक रचना।

**प्रश्न..**ओहह क्या खूब बात कही आप ने..सच में आम आदमी के लिए तो सैकड़ों प्रश्न और..इस "और" के बाद मुझे नहीं लगता कि कुछ लिखने की जरूरत है और फिर भी न आये समझ तो रचना पुनः पढ़े।

**आशा..**क्या प्रभावी और चिंतनीय बात कही है, कर्म प्रधान बना कर खुद को, बहूत खूब।

**भ्रष्टाचार..**सच कहा आप ने, बातें तो सब करते है लेकिन सहयोग किसी का नहीं, यहाँ तक कि खुद ही नही छोड़ पाते है..

वाह आदरणीय, आप ने बहूत ही सार्थक, संदेश देती हूई बेहतरीन रचनाएँ लिखी है..आप को पुनः बधाइयाँ और बहूत बहूत शुभकामनाएं।
**आप के उज्जवल साहित्यक भविष्य की कामना के साथ सादर नमन,..**

**शीतल खण्डेलवाल**

आदरणीय डॉ कोरी जी को सादर नमस्कार
सप्ताह के कवि के रूप में प्रस्तुत होने पर आपको बहुत बहुत ब**धाई और शुभकामनाएं**
आप में और मुझ में एक common बात है कि आप भी electrical engineer हैं और मैं भी। आप बहूत प्रतिभाशाली और उच्च शिक्षित हैं। आप मेरे लिए बहूत सम्माननीय हैं।
बचपन के शौक को केरियर के साथ साथ बढ़ाने के लिए आप बधाई के पात्र हैं।
**पहली रचना सन्मार्ग पर चलने की शिक्षा देती हूई सुंदर रचना है।**
**दूसरी रचना किताबों का महत्व बताती हूई खूबसूरत रचना है।**
**एक संवेदनशील हृदय ही किताबें पढ़कर भी भावुक हो सकता है।**
**तीसरी रचना संस्कार- तहज़ीब और संस्कृति की पहचान है, ऐसा बताती है, बहूत सुंदर रचना है।**
**चौथी रचना वृक्षों का महत्व बताती हूई सार्थक रचना है।**
**पांचवी रचना, भ्रष्टाचार विरुद्ध ईमानदारी, वाह क्या शब्द संयोजन है।**
**छठी रचना कर्म प्रधान बनने की शिक्षा देती हूई सार्थक रचना है।**
**सातवीं रचना भ्रष्टाचार मुक्त भारत का सपना संजोती सुंदर रचना है।**
आपकी सभी रचनाएं ओजपूर्ण और सकारात्मक सोच से भरपूर हैं, आपकी लेखनी को शत शत नमन, एवं आपकी साहित्य यात्रा के लिए आपको
**बहूत बहूत शुभकामनाएं, पुनः बधाई।**
**मां सरस्वती की कृपा बनी रहे।**

**पिंकी परुथी "अनामिका"**

**4.**
डॉ अनिल कोरी जी को उत्सवमूर्ति बनने की शुभेच्छा...
**बतौर अभियन्ता, काव्य के प्रति संजिदगी होना आपके स्नेहील होने का**

**परिणाम हैं बालपन से जो शौक मन और मस्तिक्ष पर अंकित हो जाते है, वे ताउम्र असर करते हैं |**

आपकी रचनाओं में

**1.राहें दिखा गए भगवान बुद्‌ध**

परम सौभाग्य है बुद्‌ध को समझ पाना, आपने सदगुणों को शब्द देकर निज हृदयासन पर प्राण प्रतिष्ठित कर दिए |

**2.किताबें**

बेहतरीन मित्र है किताबें... सटिक संदेश

**3.संस्कार**

सुन्दर विचार

**4.पेड़**

सुन्दर भाव वंदना, प्रकृति के प्रति निश्छलता झलक रही हैं

**5. प्रश्न**

सुन्दर रचना

**6.आशा/ उम्मीद**

उत्कृष्ट शब्दचयन...

**7.भ्रष्टाचार**

महान भारत की कमजोर कड़ी यह भ्रष्टाचार ही है, सुन्दर अभिव्यक्ति...

आप इसी तरह सृजन कर सुधि पाठकों तक उत्कृष्ट रचनाओं का रस पहूँचाते रहें,यही कामना हैं |

**डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'**

**5.**

डॉ साहेब का आत्म कथ्य पढ़कर अच्छा लगा ।।

**जिसे गुनगुनाने का शौक़ हो उसके साथ एक अजीब सा तादात्म्य महसूस करता हूँ मैं ।।**

अपन भले ही बाथरूम सिंगर हैं ,मग़र कद्रदान किस्म के जीव हैं ।।

भाई सन्तोष तिवारी जी कह कह कर थक गये ,मग़र उन्होंने अपनी आवाज़ का जादू चलाने से न जाने क्यूँ परहेज रखा ।।

कम से कम आप तो कभी सस्वर प्रस्तुति दें।

इंतज़ार रहेगा ।।

**व्यक्ति का सृजन मना होना,**
**उसके शैक्षणिक परिवेश से कोई ख़ास ताल्लुक नही रखता ।।**
सृजन तो मन की कोमल ज़मीन पर, संवेदना के बीज चाहते हैं ।।
व्यक्ति की भाषा और शैली को शिक्षा परिपुष्ट कर सकती है ,
मग़र भावों का उमडना,
पहली और अनिवार्य शर्त है ।।
टँकण त्रुटियाँ रचना का स्वाद बिगाड़ती हैं ।।
कृपया संज्ञान ले,...
बुद्ध को गहराई से आत्मसात किया है आपने ।।
उनकी अनिवार्यता इस पतित समाज के लिए सदैव है ।।
किताबें:-पढ़कर ऐसा लगा जैसे विनीता जी का सृजन हो,,
अन्यथा स्त्रीलिंग का कोई औचित्य न था,..
शानदार सृजन
गाँधी जी का वाक्य मुझे याद आता है,
कि अच्छी पुस्तकों का मैं नर्क में भी स्वागत करूँगा ।
**पढ़ते रहिये,**
**बढ़ते रहिये ।**
संस्कार :-बेहद सादगी से हमारी धरोहर की पुनरुक्ति
वृक्ष:_- भारी देनदारियां हैं मानव की ,
इस प्रकृति के प्रति
न होते वृक्ष तो जीवन भी न होता ।
जल की तरह की अनिवार्यता का सृजन ।
प्रश्न:-
क्या बात क्या बात
महामहिमों को पैनी नज़र से देखती रचना
खूबसूरत सृजन हाशिये पर हो आदमी तो प्रश्न खड़े होते ही हैं ।
आशा उम्मीद:-
खूबसूरत गीत हुआ
कर्म और भाग्य का लेखा जोखा करती रचना ,
**पथ की राह पे चलता चल अस्पष्ट भाव**

पथ , राह???
समानार्थी शब्द
भाग्य की रेख :-
भ्रष्टाचार मुक्त भारत का आव्हान ,
सियासी परिस्थितियाँ
और हमारी लालची प्रवृत्ति एवम्
हमारी राष्ट्रीय मनोवृत्ति तथा मनःस्थिति को उकेरती पँक्तियाँ ...
बहुत ख़ूब
**जय हो, विजय हो, मंगलकामनाएं,..**

**ब्रजेश शर्मा 'विफल' झाँसी**

**6.**

**राहें दिखा गये बुद्ध**
**किताबें मित्र होती हैं**
**संस्कारों के बीज अच्छे हों**
**तो वसुंधरा भी सजती है**
**प्रश्न कितने भी जटिल हों**
**जिंदगी आशा रखती है**
**बुराई और भ्रष्टाचार से**
**तभी ये दुनिया बचती है,...**

सुंदर भाव व शब्द चयन
बिजली के तारों को जोड़ने वाले हाथो में सृजन का हुनर सौभाग्य साहित्य जगत का,.. वर्तनी में सुधार की अपेक्षा,.. कथ्य के अनुरूप शिल्प का भी प्रभावी होना अनिवार्य है।
सतत साहित्य रथ चलता रहे, शुभ हो, शुभकामनाएं,..

**डॉ. प्रीति सुराना**
**वारासिवनी (मप्र)**

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

## सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम — भाषा समन्वयक — www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.) — www.matrubhashaa.org

मातृभाषा — वैचारिक महाकुम्भ — www.matrubhashaa.com


# अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन

१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१

संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com